भू-राजनीति
Geopolitics

Dr. Sabiha Khan
Assistant Professor
Department of Geography
Mohanlal Sukhadia University, Udaipur

- भू राजनीति, विदेश नीति के अध्ययन की वह विधि है जो भौगोलिक चरों के माध्यम से अन्तरराष्ट्रीय राजनैतिक गतिविधियों को समझने, उनकी व्याख्या करने और उनका अनुमान लगाने का कार्य करती है।
- 'भौगोलिक चर' के अन्तर्गत उस क्षेत्र का क्षेत्रफल, जलवायु, टोपोग्राफी, जनसांख्यिकी, प्राकृतिक संसाधन, तथा अनुप्रयुक्त विज्ञान आदि आते हैं।
- यह शब्द सबसे पहले रुडोल्फ ज़ेलेन ने सन् १८९९ में प्रयोग किया था। भूराजनीति का उद्देश्य राज्यों के मध्य संबंध एवं उनकी परस्पर स्थिति के भौगोलिक आयामों के प्रभाव का अध्ययन करना है।
- भू राजनीति वास्तव में एक व्यवहारिक कूटनीतिक विज्ञान है जो कि किसी राज्य के राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु भौगोलिक निश्चयवाद का आश्रय लेती है।

भू राजनीति

- कार्ल होउसहोफ़ेर के अनुसार राजनीतिक भूगोल स्थैतिक एवं विवरणात्मक विषय है जबकि भू -राजनीति एक गतिक विज्ञान है जो विश्व के राजनीतिक परिवर्तनों के साथ-साथ बदलता है।
- राजनीतिक भूगोल का विषय क्षेत्र विस्तृत है, जिसके अंतर्गत राज्यों को भौगोलिक इकाई मानकर संपूर्ण तत्वों के प्रभावों का अध्ययन किया जाता है इसके विपरीत भू राजनीति का क्षेत्र संकुचित है एवं राजनीतिक कार्यों के लिए राज्य के कवच का कार्य करता है।
- राजनीतिक भूगोल क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार राज्य के क्रमिक विकास को प्रोत्साहित करती है जबकि भू राजनीति राजनीतिक विस्तार वाद को बढ़ावा देती है।

- क्रिस्टोफ के अनुसार राजनीतिक भूगोल को प्रधानता देती है और इसी के आधार पर राज्यों की राजनीतिक व्याख्या प्रस्तुत करता है जबकि भू-राजनीति, राजनीतिक तथ्यों पर आधारित है एवं उनकी भौगोलिक व्याख्या का प्रयास करती है।
- राजनीतिक भूगोल क्षेत्र के संदर्भ में राज्य का पर्यावलोकन करता है जबकि भू-राजनीति राज्य के संदर्भ में क्षेत्र का मूल्यांकन करती है।
- भू राजनीति एक संकुचित विचारधारा है जो विस्तार वाद को प्रोत्साहन देकर विश्व संघर्ष एवं युद्ध को प्रोत्साहित करती है जबकि राजनीतिक भूगोल भौगोलिक तथ्यों का वास्तविक विश्लेषण कर सत्यता को प्रतिपादित करता है और इससे विश्व शांति एवं राज्यों के बीच पारस्परिक सहयोग को प्रोत्साहन मिलता है।

- राजनीतिक भूगोल एक नवीन विषय है जिसका अस्तित्व रेड जेल के प्रसिद्ध ग्रंथ राजनीतिक भूगोल से माना जा सकता है।
- राजनीतिक भूगोल के इतिहास को निम्न कालो में विभाजित किया जा सकता है :-
- 1. प्रारंभिक काल (Early Period 500B.C. -1700 A.D.)- इस दौरान राज्य एवं पर्यावरण संबंधित अध्ययन होता था।
- 2. मध्यकाल (Medieval Period 1700 A.D. – 1900 A.D.)-इस दौरान राष्ट्रीय शक्ति के रूप में राज्य के अध्ययन पर बल दिया जाता था।
- 3.आधुनिक काल (Modern Period 1900 A.D. To till date)- राजनीतिक क्षेत्र अथवा राज्य के बारे में अध्ययन ही मुख्य बिंदु है

प्रारंभिक काल (Early Period)

- इस कालो को 3 उप कालो में विभाजित किया जा सकता है:-
- 1.A. प्राचीन काल 500 ईसा पूर्व से 500 ईसवी तक माना गया है।
- इसमें हेरोडोटस, प्लेटो, अरस्तु, स्ट्रेबो इत्यादि यूनानी भूगोलवेत्ता इतिहासकारों एवं दार्शनिकों का योगदान रहा।
- हेरोडोटस ने मानव समूह एवं भौतिक पर्यावरण में गहन संबंध बताया।
- अरस्तु ने आदर्श राज्य की कल्पना करते हुए उसके लिए दो विशेषताओं पर बल दिया- जनसंख्या का आकार एवं क्षेत्र विस्तार की प्रकृति।
- स्ट्रेबो ने राज्यों की समस्याओं का अध्ययन का प्रयास किया उन्होंने सुचारू प्रशासन हेतु शक्तिशाली सरकार एवं प्रशासक को आवश्यक माना।

- **1.B. अंध युग (Dark Age): रोम साम्राज्य के पतन के बाद पांचवी शताब्दी से लगभग 1000 वर्षों के लिए यूरोप में अंध युग का प्रभाव रहा।**
- **अरब भूगोलवेत्ता मैं इस समय राजनीतिक भूगोल से संबंधित कार्य हुए।**
- **इब्ने खालदून ने प्रजातियों एवं नगरों के अध्ययन पर जोर दिया जो की राजनीति के मुख्य अवयव थे।**
- **राज्यों के विकास एवं पतन के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए।**

1.C. पुनर्जागरण काल (Renaissance Period):

- सोलवी शताब्दी के प्रारंभ में भौगोलिक अध्ययन में पुनर्जीवन की शुरुआत हुई और कई विद्वानों के द्वारा मानव पर्यावरण संबंधों का अध्ययन किया गया।
- जीन बोडिन ने बताया कि राज्य का राष्ट्रीय चरित्र उसकी जलवायु एवं स्थलाकृति से प्रभावित होता है। इस प्रकार एक सुदृढ़ निश्चय वादी सिद्धांत के आधार पर उन्होंने कहा कि मनुष्य की प्रकृति, स्वभाव, प्रतिभा, इच्छा एवं राजनीतिक प्रणाली इत्यादि भूमंडलीय तंत्र से जुड़े हुए मानव संबंधों का प्रतिफल है।
- चार्ल्स मॉन्टेस्क्यू निश्चय वादी विचारधारा के समर्थक थे उनके अनुसार उष्ण जलवायु तानाशाही तथा शीत जलवायु प्रजातंत्र को प्रोत्साहित करती है, इसी आधार पर राजनीतिक मॉडल प्रस्तुत किया। उन्होंने कृषि उत्पादकता एवं सरकार के प्रकार की बीच में भी संबंध बताया। उर्वर मैदानी अधिक उत्पादकता वाले कृषि क्षेत्र सदैव ही बड़े राज्यों का विकास करते हैं जबकि पर्वतीय एवं पहाड़ी क्षेत्र छोटे राज्यों का विकास करते हैं परंतु उनमें स्वतंत्रता की भावना प्रबल होती है।

2. मध्यकाल (Medieval period)

2.A Classical Period (चिरसम्मत काल)

- कांट महोदय मनुष्य के बीच अनुभव के संप्रेषण के दो माध्यम बताएं –
  - i)विवरणात्मक अथवा ऐतिहासिक एवं
  - ii) वर्णनात्मक या भौगोलिक
- इतिहास एवं भूगोल वर्णनात्मक विषय माना ।इतिहास का संबंध समय अथवा काल से है जबकि भूगोल का संबंध स्थान से है ।
- भौतिक भूगोल को प्रकृति का संक्षिप्त विवरण बताया जो ना केवल इतिहास बल्कि सभी भूगोल का आधार है।
- कांट महोदय को राजनीतिक भूगोल का जनक तथा आधुनिक भूगोल का संस्थापक कहा जाता है।

- अलेक्जेंडर वॉन हंबोल्ट और कॉर्ल रिटर 19वीं सदी के पूर्वार्ध के महत्वपूर्ण विद्वान एवं आधुनिक भूगोल के जनक माने जाते हैं।
- अलेक्जेंडर वॉन हंबोल्ट ने राजनीतिक भूगोल में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है । इन्होंने जनसंख्या एवं अन्य आंकड़ों के आधार पर राज्यों के विभिन्न राजनीतिक विभागों में समानता एवं विषमता को ढूंढने का प्रयास किया । इन्होंने मेक्सिको को 12 विभागों एवं 3 जनपदों में विभाजित किया । इनके अनुसार यह विभाग 1 दिन राजनीतिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण होंगे एवं तटीय क्षेत्र अधिक जनसंकुल हो जाएंगे।

- कॉर्ल रिटर ने बताया किमनुष्य की क्रिया एवं राज्य का इतिहास मुख्यत: उनके उच्चावच एवं जलवायु से प्रभावित होता है एवं भविष्य में भूगोल राजनीतिक घटनाओं को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।
- प्राकृतिक पर्यावरण मानव सभ्यता एवं इतिहास को प्रभावित करते हैं । साथ ही भौगोलिक तत्वों का सापेक्षिक प्रभाव, मनुष्य की कला तथा प्रविधि के विकास के साथ-साथ बदलता है । इन्होंने जैविक संस्कृति के सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

2.B. वैज्ञानिक निश्चयवाद एवं सामाजिक डार्विनवाद (Scientific Determinism and Social Darwinism)

- 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में डार्विन के जीव विज्ञान शोध ने भूगोल में मानव पर्यावरण संबंध को एक नई दिशा दी। डार्विन के "प्राकृतिक चुनाव" एवं "योग्यतम की उत्तरजीविता के सिद्धांत" ने भूगोल को पर्यावरण संबंध के लिए अवसर प्रदान किया
- फ्रेडिक रटज़ेल मूल रूप से एक राजनीतिक वैज्ञानिक थे । जिन्हें राजनीतिक भूगोल का जनक माना जाता है ।यह डार्विन के "जातियों के उद्भव" तथा हरबर्ट स्पेंसर के "योग्यतम की उत्तरजीविता" सिद्धांत से प्रेरित थे। इन्होंने लेबेंसरोम की संकल्पना दी।

3. आधुनिक काल
(Modern Period)

3.A. अंतरा युद्ध काल (Inter War Period):

- इस काल की शुरुआत प्रथम विश्व युद्ध से मानी जाती है क्योंकि युद्ध के कारण यूरोप के राजनीतिक मानचित्र में अनेक परिवर्तन हुए।
- कहीं नहीं देशों का जन्म हुआ (पोलैंड ,चेकोस्लोवाकिया, ऑस्ट्रिया, हंगरी , बाल्टिक राज्य) तो अनेक देशों की सीमाओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए । सर्वाधिक जर्मनी से प्रभावित रहा।
- अनेक देशों की सरकार ने भूगोल के विद्वानों को इन परिवर्तनों के अध्ययन के लिए आमंत्रित किया। इनमें ओगिल्वी (इंग्लैंड), दी मार्तोनि (फ्रांस), रोमेर (पोलैंड), सीवीजी (यूगोस्लाविया) बोमेन, डगलस, जॉनसन (USA) , प्रमुख थे।

- इस समय जर्मनी में तीव्र राष्ट्रवाद का उदय हुआ, जिस कारण विषय का विकास एवं भू- राजनीति का सूत्रपात हुआ।
- भू राजनीति का उद्देश्य विस्तार वादी एवं युद्ध पर रख रहा है । इस विचारधारा के उद्भव एवं विकास में रुडोल्फ जेलन, कॉर्ल होउसेहोफर तथा फेड्रिक रटज़ेल का प्रमुख योगदान रहा है।
- किसी भी राज्य के स्थायित्व के लिए शक्ति को प्रमुख कारक माना। एक शक्तिशाली राज्य के लिए तीन गुणों को आवश्यक माना -विस्तृत क्षेत्र, संचलन की स्वतंत्रता एवं आंतरिक एकता।
- हेल्फोर्ड मैकिण्डर , इसासेवेरस्की , बोमेन , व्हिटलसि , हार्टशोर्न , ने भी राजनीतिक भूगोल में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

- हेल्फोर्ड मैकिण्डर ने 1904 “The Geographical Pivot of History” लेख मैं विश्व रणनीति संबंधी उत्कृष्ट विचारों को अभिव्यक्त किया जिसे तात्कालिक राजनीतिक भूगोलवेत्ता प्रभावित हुए।
- 1919- “Democratic ideas and reality” and 1943 – “The round world and winning the peace” जिसके माध्यम से विश्व शांति को बनाए रखने में राजनीतिक भूगोल की भूमिका की चर्चा की । इन का सिद्धांत “हृदय स्थल सिद्धांत” के नाम से जाना जाता है।
- बोमेन ने तत्कालीन विश्व की प्रमुख समस्या क्षेत्रों का विश्लेषण किया ।

- व्हिटलसि ने राजनीतिक भूगोल में ऐतिहासिक उपागम की शुरुआत की । "The Earth & the State: A study of political geography "मैं बताया कि यद्यपि राजनीतिक भूगोल राज्य का अध्ययन करता है परंतु इसका मुख्य उद्देश्य राजनीति की अपेक्षा धरातल के अध्ययन से है।
- हार्टशोर्न ने राजनीतिक भूगोल के सैद्धांतिक पक्षों पर अनेक लेख लिखें । इनका 1935 में लिखा गया लेख "Recent developments in political geography" काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। इन्होंने राजनीति भूगोल में अध्ययन के आकृतिक और कार्यात्मक उपागम दोनों का सुझाव दिया। राजनीतिक भूगोल में इनके सकारात्मक प्रयासों को एक सम्मानित स्थान प्राप्त हुआ है।

3.B. युद्ध उत्तर काल (Post War Period):

- इस काल में राजनीतिक भूगोल का स्वर्णिम विकास हुआ है । अनेक विद्वानों द्वारा कई महत्वपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन हुआ।
- H.W. Vegart & V.Stefenson (1947)“Compass of the world ”
- G.E. Piercee – (1948)“World Political Geography”
- Fitz. Gerald- (1964)“The New Europe”
- Eminent Geographers: W.G. East, OHK Spate, A.E.Moodie, Walkenverg, L. Karlson, R. Heartshorne, W.A.D.Jackson, R.E. Casperson , J.V. Mingee, N.J.V. Presscot, R.Meure, P.J. Taylor

इस काल में निम्न भू राजनीतिक घटनाओं से प्रभावित रहा, जिसका विषय के विकास पर स्पष्ट प्रभाव पड़ा:-

- 1. इस काल में एशिया और अफ्रीका में अनेक नए राज्यों का जन्म हुआ । भूगोलविदों ने इन राज्यों के राजनीतिक तंत्र के अध्ययन में रुचि दिखाई, जिससे अन्य ग्रंथों का प्रकाशन हुआ।
- 2. इस काल में कई पुराने राज्यों जैसे जर्मनी, कोरिया, पलेस्टाइन, वियतनाम, भारत-पाकिस्तान, सोवियत-संघ, चेकोस्लोवाकिया, युगोस्लाविया इत्यादि का विभाजन भी हुआ । जिससे अनेक समस्याएं उत्पन्न हुई और राजनीतिक भूगोल नेताओं का ध्यान आकृष्ट हुआ।

- 3. इस दौरान वियतनाम और जर्मनी जैसे राज्यों का पुनः एकीकरण हुआ।
- 4. विश्व के राजनीतिक मानचित्र में अनेक सीमा परिवर्तन हुए। उदाहरण के लिए द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जर्मनी के क्षेत्र में पुन: कमी हो गई एवं आर्डर नदी के पूर्व का समस्त क्षेत्र पोलैंड को दे दिया गया ।इस प्रकार सीमा परिवर्तनों ने भी भूगोलवेत्ता ओं का ध्यान आकृष्ट किया।
- 5. द्वितीय विश्व युद्ध के बाद उपनिवेशवाद की समाप्ति की शुरुआत हुई । जिसके फलस्वरूप एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिकी देश स्वतंत्र होने लगे जो भी ध्यान केंद्रित करने का एक बिंदु रहा है।

- 6. इस दौरान विश्व के अनेक देशों में सीमा एवं क्षेत्रीय विवाद उत्पन्न हुए। इनमें नाइजीरिया – घाना, अबीसिनिआ-सोमाली, चीन-भारत, भारत - पाकिस्तान ,चीन-रूस , ईरान-इराक उल्लेखनीय है। यह विवाद विश्व शांति के लिए एक चुनौती के रूप में उभरा तथा राजनीतिक भूगोल नेताओं की सूची का विषय बना।
- 7. परमाणु शक्ति के विकास- एटम बम, हाइड्रोजन बम, लेजर उपकरण, अंतर महाद्वीपीय प्रक्षेपास्त्र, अंतरिक्ष युद्ध के बढ़ते हुए खतरों ने अंतरराष्ट्रीय तनाव की वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। क्योंकि राजनीतिक भूगोल का मुख्य विषय अंतरराष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन करना है अत: यह भी भूगोलवेत्ताओं के लिए एक रुचि का विषय है।

- 8. आधुनिक विश्व, राजनीति एवं आर्थिक आधार पर कई गुटों में बटा हुआ है। जिससे पारस्परिक प्रतिस्पर्धा एवं तनाव का वातावरण उत्पन्न हुआ है। इन गुटों एवं संगठनों के उद्भव से अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अनेक समस्याओं का जन्म हुआ है ,विशेषकर आतंकवाद जो की सबसे बड़ी चुनौती है । यह भी राजनीतिक भूगोल का एक महत्वपूर्ण विषय है।
- 9. अंतरराष्ट्रीय राजनीति में आर्थिक दबाव एवं आर्थिक शक्ति के महत्व में वृद्धि हुई है , जिसने राजनीतिक भूगोल के अध्ययन को प्रभावित किया है। आजकल पारंपरिक विषयों के स्थान पर निर्वाचन अध्ययन, प्रशासनिक सुधार, प्रादेशिक समस्या, नगरीय राजनीति, पर्यावरण राजनीति, आर्थिक उपनिवेशवाद, भूमंडलीकरण, आतंकवाद आदि विषयों के अध्ययन पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

- 10. परिवहन एवं संचार के साधनों में अपूर्व प्रगति के कारण संपूर्ण विश्व एक इकाई के रूप में रह गया है तथा राजनीतिक सीमाएं बहुत हद तक प्रभावहीन हो गई है। नए राजनीतिक भूगोल , राज्य के राजनीतिक- आर्थिक जीवन में सांस्कृतिक भू दृश्य पर विश्व व्यवस्था के प्रभाव के निरूपण और विश्लेषण पर केंद्रित हो गया है।
- 11. आज का विश्व जनसंख्या-संसाधन के बिगड़ते संतुलन से प्रभावित है , जिसका प्रभाव पर्यावरण पर देखने को मिलता है। इस चुनौती ने वीमंडलीकरण की शुरुआत की है। आज की रणनीति अधिकतम संसाधनों के उपभोग ,आर्थिक-व्यापारिक क्षेत्रों में आधिपत्य को प्रेरित करती है।

धन्यवाद

Disclaimer: The content displayed in the PPT has been taken from variety of different websites and book sources. This study material has been created for the academic benefits of the students alone and I do not seek any personal advantage out of it.